

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की ।
 जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥
 ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा ।
 फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल ।
 जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥
 ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा ।
 आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
 जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥
 ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 सम्यक् दर्शन ज्ञान व्रत, शिव मग-तीनों मयी ।
 पार उतारन यान 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥
 ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा ।

सम्यग्दर्शन पूजन

(दोहा)

सिद्ध अष्ट-गुणमय प्रकट, मुक्त-जीव-सोपान ।
 ज्ञान चरित जिहँ बिन अफल, सम्यक्दर्श प्रधान ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् इति आह्वाननम् ।
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ, तिष्ठ ठःठः इति स्थापनम् ।
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणं ।

(सोरठा)

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै ।
 सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजों सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 जल केसर घनसार, ताप हरै सीतल करै ।
 सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजों सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।